जनवरी-2015 नववर्ष-2015 की शुभकामनाओं सहित मूल्य : 15/-

मासिक पत्रिका

भागवत चिंतन

अध्यात्म ❖ दर्शन ❖ सद्‌चिंतन ❖ भक्ति साहित्य समन्वित

बृजभूमि वृंदावन में गोकुलधाम धर्मशाला

का

भव्य भूमि पूजन एवं शिलान्यास समारोह

दिनांक : रविवार, 25 जनवरी 2015

समय-प्रातः 11 बजे





संस्थापक अध्यक्ष :
परम श्रद्धेय गौभक्त
श्री संजीव कृष्ण ठाकुर जी

स्थान : प्लॉट नं. 25, 26, 27 रुकमणि विहार, छटीकरा-वृन्दावन रोड, मथुरा

आयोजक : गोकुलधाम सेवा संस्थान (रजि.)

मुख्य कार्यालय : श्री राधा माधवधाम, निकट श्याम कुटी, परिक्रमा मार्ग, वृन्दावन-281121 (उ०प्र०)
सम्पर्क सूत्र : 0091-9219664065, 8126721167 ई-मेल : gokuldham.sevasansthan@gmail.com

बृजभूमि वृंदावन में गोकुलधाम धर्मशाला



वृन्दावन, योगिराज नन्द नन्दन भगवान श्रीकृष्ण की वह आनंदमयी लीलाभूमि है जहाँ रहकर कृष्ण कन्हैया ने अपने ग्वाल-वाल, गोपियों, नंदबाबा, मैया यशोदा और राधारानी को आल्हादित किया। इसी भूमि पर रास रचाकर श्री कृष्ण ने पूरे विश्व को प्रेम संदेश दिया।

चैतन्य महाप्रभु, सूरदास, भक्तकवि रसखान, प्रेम दिवानी मीरा सदृश अनेकानेक भक्त शिरोमणि यहाँ आये तो यहीं के होकर रह गए। आज भी अनेकों भक्त यहाँ आकर कृष्ण की प्रतीति और अनुभूति करते हैं। पूरे विश्व में वृन्दावन आध्यात्मिक और चिर शांति की प्रिय स्थली बन गया है। इसी पावन भूमि पर शीघ्र बनने जा रही विशाल गोकुल धाम धर्मशाला का निर्माण आप सभी उदार मनाओं के सहयोग से प्रस्तावित है।

इसमें हमारा यह प्रयास होगा कि आधुनिक सुख-सुविधाओं के साथ-साथ आपको आत्मिक शांति और आध्यात्मिक शांति का घनीभूत अनुभव भी प्राप्त हो। छटीकरा वृन्दावन मुख्य मार्ग पर बाँके बिहारी जी के मंदिर से मात्र 2 कि.मी. पहले एवं प्रेम मंदिर के अत्यन्त समीप में 1800 वर्ग गज के क्षेत्रफल में बनी यह धर्मशाला यहाँ आने वाले हर भक्त के लिए एक अनुपम उपहार होगी।

सहयोग प्रकार

संस्थापक ट्रस्टी हेतु सहयोग राशि.......................5 लाख रूपये

अभी तक 21 सौभाग्यशाली परिवार संस्थापक ट्रस्टी के रूप में जुड़ चुके हैं।
कुल 31 संस्थापक ट्रस्टी संस्था के द्वारा बनाये जायेंगें आपश्री भी यह सौभाग्य अर्पित कर सकते हैं।

ट्रस्टी हेतु सहयोग राशि............................2 लाख 51 हजार रूपये

आजीवन सदस्य हेतु सहयोग राशि.........................1 लाख रूपये

नोट : 31 हजार रूपये या उनसे अधिक की राशि का सहयोग करने वाले दानी महानुभावों के नाम सत्संग भवन में शिला पट्टिका पर लिखे जायेगें।

आप श्री के द्वारा दिये गये दान पर आयकर की धारा 80 (जी) के अन्तर्गत छूट मान्य है।



॥ श्रीकृष्णं वन्दे जगद्गुरुम्॥

भागवत चिंतन

अध्यात्म ❖ दर्शन ❖ सद्चिन्तन ❖ भक्ति साहित्य समन्वित मासिक पत्रिका

वर्ष : 1 | जनवरी-2015 | अंक : 4

प्रेरणास्रोत : श्रद्धेय श्री संजीव कृष्ण 'ठाकुरजी'

:: मुख्य कार्यालय ::
श्री राधामाधव सेवाश्रय चैरीटेबिल ट्रस्ट (रजि.)
श्री राधामाधव धाम, निकट श्याम कुटी
परिक्रमा मार्ग, वृन्दावन, (मथुरा) 281121 उ.प्र.
दूरभाष : 0091-9219664065, 0091-9389793848
E-mail : info@samarpangoshala.com
Website : www.samarpangoshala.com

स्वामी, प्रकाशक एवं मुद्रक श्री सत्यभान शर्मा के लिए श्री राधामाधव सेवाश्रय चैरिटेबिल ट्रस्ट, वृन्दावन से प्रकाशित एवं आशीष प्रिण्टर्स एण्ड स्टेशनर्स, मथुरा में मुद्रित।

अनुक्रमणिका...

आगामी कार्यक्रम

गोकुलधाम धर्मशाला का
भव्य भूमि पूजन समारोह

25 जनवरी 2015, रविवार समय : प्रातः 11 बजे

स्थान : रुकमणी विहार, वृन्दावन

कृपया अपने आगमन की पूर्व सूचना दें, ताकि आपके आवास की समुचित व्यवस्था की जा सके।
Mob. : 0091-9219664065, 0091-9389793848, 0091-8126721167

श्रीमद्भागवत कथा ज्ञानयज्ञ

27 जनवरी से 2 फरवरी 2015 समय : दोपहर 2 से सायं 5 बजे

स्थान : जी-7,8 पार्क, सेक्टर-11, रोहिणी, नई दिल्ली

आयोजक : श्री हरिओम अग्रवाल, महेश अग्रवाल, बालकिशन अग्रवाल गोपाल अग्रवाल एवं समस्त अग्रवाल परिवार

नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर के सहयोगार्थ

श्रीमद्भागवत कथा महोत्सव

16 फरवरी से 22 फरवरी 2015 समय : प्रातः 10 से दोपहर 1 बजे

स्थान : डाइट ग्राउण्ड, आदिलाबाद (तेलंगाना)

आस्था चैनल द्वारा सीधा प्रसारण

नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर के सहयोगार्थ

श्रीमद्भागवत कथा ज्ञानयज्ञ

24 फरवरी से 2 मार्च 2015 समय : प्रातः 10 से दोपहर 1.30 बजे

स्थान : ग्राम-जुरौला, पो. सगुराई, थाना-कुशेसर स्थान, जिला-दरभंगा (बिहार)

संस्कार चैनल द्वारा सीधा प्रसारण

श्रीधामवृन्दावन में गोकुलधाम धर्मशाला का भव्य भूमि पूजन समारोह-25 जनवरी 2015

गोकुलधाम सेवा संस्थान (रजि०)

संस्थापक अध्यक्ष

परम श्रद्धेय गौभक्त श्री संजीव कृष्ण ठाकुर जी

मुख्य संरक्षक

श्री हरी चन्द अग्रवाल (I.I.L. Delhi)

मुख्य प्रेरक

श्री सत्यभान शर्मा (वृन्दावन)

कार्यकारिणी

वरि. उपाध्यक्ष

इंजी. राजेन्द्र प्रसाद सिंघल
(फेस-1, अशोक विहार)
9212247301

महामंत्री

ज्ञान अग्रवाल
(प्रशान्त विहार)
9810058059

अति. महामंत्री

राजीव शर्मा
(सैक्टर-8, रोहिणी)
9810690285

कोषाध्यक्ष

ओम प्रकाश अग्रवाल
(फेस-2, अशोक विहार)
9810066690

मुख्य सलाहकार

नवीन गोयल
(प्रशान्त विहार)
9810001228

श्याम लाल गुप्ता
(सी-9, सैक्टर-8, रोहिणी)
9312232290

नरेश मित्तल
(गुड़गांव)
9711191983

सलाहकार निर्माण

अक्षय कुमार सिंघल
(ए-2, पश्चिम विहार)
9717788186

भूपेन्द्र रावत
(एस.आर. एसोसिएट्स)
9811937347

मुकेश गौड
(सैक्टर-1, अवन्तिका)
9811604969

उपाध्यक्ष

रामकुमार गुप्ता
(राजौरी गार्डन)
9313514141

दिनेश शर्मा
(डी-15, सैक्टर-3, रोहिणी)
9811260617

पवन कुमार डालमिया
(शुभम एन्कलेव, पश्चिम विहार)
9311004601

राजेश गोयल
(सी-5, सैक्टर-6, रोहिणी)
9811160627

रमेश कुमार गोयल
(एफ-19, सैक्टर-8, रोहिणी)
9311080302

अशोक कुमार अग्रवाल
(बी.टी., शालीमार)
9312212790

मंत्री

पी. डी. गुप्ता
(तिलक नगर)
9810449062

अनेश जैन
(एच-34, सैक्टर-3, रोहिणी)
9310091664

बलराज माथुर
(प्रशान्त विहार)
9990199773

सुभाष जैन
(डी-10, सैक्टर-8, रोहिणी)
991116440

केवल कृष्ण टीटू
(सैक्टर-1, अवन्तिका)
9312568839

सुरेश शर्मा
(बसई दारापुर)
9650296536

सह कोषाध्यक्ष

अक्षय सिंघल
(ए-3, सैक्टर-8, रोहिणी)
9312247550

श्रीधामवृन्दावन में गोकुलधाम धर्मशाला का भव्य भूमि पूजन समारोह-25 जनवरी 2015

गोकुलधाम सेवा संस्थान के सौभाग्यशाली संस्थापक ट्रस्टी

संस्थापक अध्यक्ष

परम श्रद्धेय गौभक्त श्री संजीव कृष्ण ठाकुर जी

श्री ओम प्रकाश अग्रवाल (फेस-2, अशोक विहार)	श्री ज्ञान अग्रवाल (प्रशान्त विहार)	श्री सत्यभान शर्मा (वृन्दावन)
श्री राजीव शर्मा (वृन्दावन)	श्रीमति राधा देवी (वृन्दावन)	श्री अक्षय सिंघल (ए-3, सैक्टर-8, रोहिणी)
इंजी. राजेन्द्र प्रसाद सिंघल (फेस-1, अशोक विहार)	श्री नवीन गोयल (प्रशान्त विहार)	श्री अशोक कुमार अग्रवाल (बी.टी., शालीमार)
श्री बाल मुकुन्द गोयल (प्रशान्त विहार)	श्री नरेश मित्तल (गुड़गांव)	श्री अशोक कुमार अग्रवाल (बी.टी., शालीमार)
श्री बलराज माथुर (प्रशान्त विहार)	श्री पवन कुमार डालमिया (शुभम एन्कलेव, पश्चिम विहार)	श्री भूपेन्द्र रावत (एस.आर. एसोसिएट्स)
श्री अक्षय कुमार सिंघल (ए-2, पश्चिम विहार)	श्री रामकुमार गुप्ता (राजौरी गार्डन)	श्री पी. डी. गुप्ता (तिलक नगर)

श्री राजेश गोयल (सी-5, सैक्टर-6, रोहिणी) — श्री दिनेश कुमार गुप्ता (प्रशान्त विहार) — श्री अशोक कुमार रॉय (सिंगरौली, मध्य प्रदेश) — श्री हरी अग्रवाल (I.I.L. Delhi)

गोकुलधाम सेवा संस्थान के सौभाग्यशाली ट्रस्टी

श्री दिनेश शर्मा (डी-15, सैक्टर-3, रोहिणी)	श्री रमेश चन्द गुप्ता (बी-9, सैक्टर-5, रोहिणी)	स्व. श्री देवी प्रसाद अग्रवाल (पॉकेट-9, सैक्टर-24, रोहिणी)
प्रिया सखी मण्डल (प्रशान्त विहार)	श्री श्याम लाल गुप्ता (सी-9, सैक्टर-8, रोहिणी)	श्री रमेश कुमार गोयल (एफ-19, सैक्टर-8, रोहिणी)
श्री विनोद सर्राफ (सी-9, सैक्टर-8, रोहिणी)	श्री सुभाष जैन (डी-10, सैक्टर-8, रोहिणी)	श्री अनिल बंसल (रघु नगर)
श्री जानकी प्रसाद गोयल (त्री नगर)	श्री राकेश मित्तल (फेस-1, अशोक विहार)	श्री अनेश जैन (एच-34, सैक्टर-3, रोहिणी)
श्री श्याम सुन्दर गोयल (द्वारका)	श्री मुकेश गौड (सैक्टर-1, अवन्तिका)	श्री हरे कृष्ण शर्मा (संजय नगर, सैक्टर-2, रोहिणी)
श्री नरेन्द्र गर्ग (प्रशान्त विहार)	श्री केवल कृष्ण टीटू (सैक्टर-1, अवन्तिका)	श्री ईश्वर चन्द बंसल (चारधाम अपार्ट., रोहिणी)

श्री विनोद दाधिया (मुम्बई) — श्री सुरेश कुमार शर्मा (बसई दारापुर) — श्री नवल खेतान (गुँटूर) — श्रीमति शीला खण्डलेवाल (पॉकेट-3, सैक्टर-23, रोहिणी)

श्रीधामवृन्दावन में गोकुलधाम धर्मशाला का भव्य भूमि पूजन समारोह-25 जनवरी 2015

गोकुलधाम सेवा संस्थान के सौभाग्यशाली कमरा सहयोगकर्त्ता

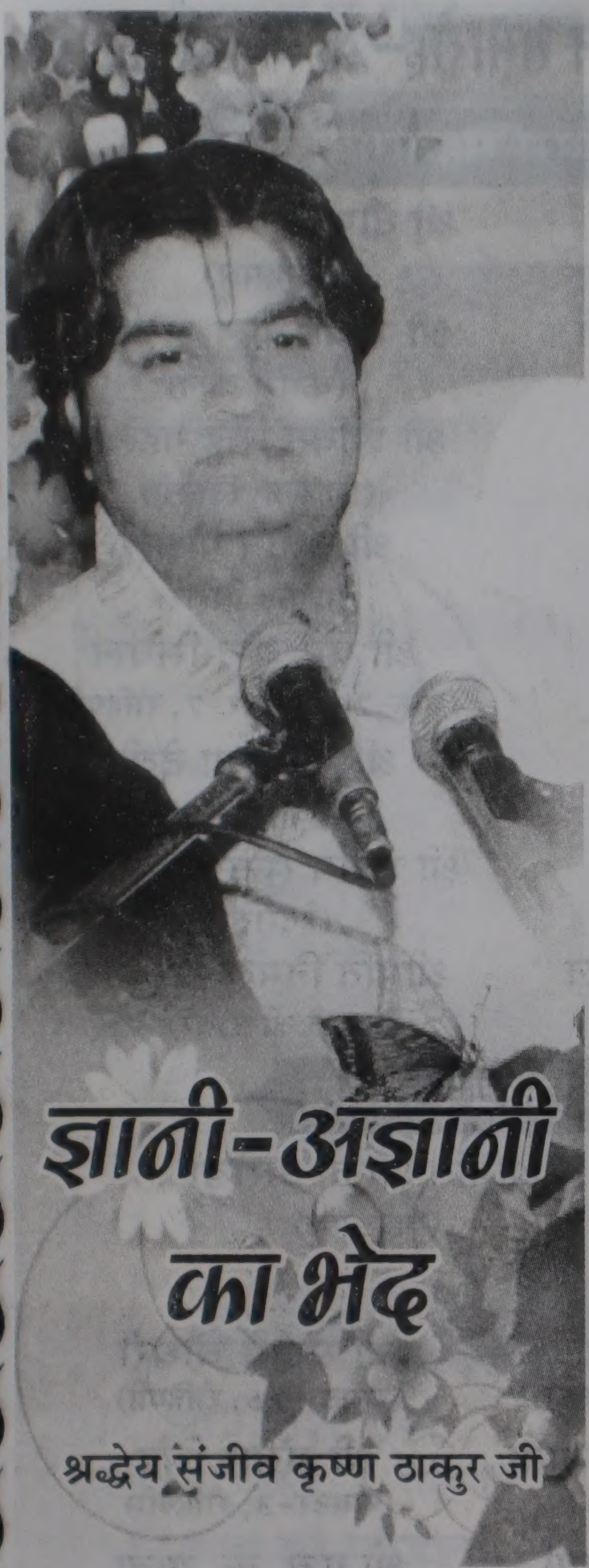
श्री किशन राजू जगदीश झंवर (सोरापुर, कर्नाटक)
श्री नंदकिशोर मधु झंवर (सोरापुर, कर्नाटक)
श्री दीपचंद राजलीवाला (हिसार)
श्री पतराम राजलीवाला (हिसार)
श्री मदन अग्रवाल राजलीवाला (दीपाली, दिल्ली)
श्री रोशनलाल अग्रवाल (कैमरी वाले)
श्री ज्ञान चन्द गोयल (करनाल)
श्री कमल कुमार गुप्ता (नांगलोई)
श्री शक्ति सिंह गहलोत (छावला, दिल्ली)
श्री श्याम सुन्दर अग्रवाल (सक्ती, छत्तीसगढ़)
श्री महावीर प्रसाद गोयल (केशवपुरम, दिल्ली)
श्री नवीन गोयल (प्रशान्त विहार)
श्री रमेश चन्द बम्ब (एफ-22, सैक्टर-3, रोहिणी)
श्रीमति शशिबाला (बी-9, सैक्टर-5, रोहिणी)
श्री प्रेम चन्द सिंघल (एफ-24, सैक्टर-7, रोहिणी)
श्रीमति ऊषा छाबड़ा (पटपड़गंज, दिल्ली)
श्रीमति बिमला देवी सिंघल (ए-3, सैक्टर-8, रोहिणी)
श्रीमति इन्द्रा देवी (करनाल)
श्री कुलदीप सूद (द्वारका)
श्रीमति रूचि विजय (बैंगलौर)
श्री श्याम सुन्दर भगेरिया (हैदराबाद)
श्री महेन्द्र गुप्ता (बैंगलौर)
श्री शिव शंकर अग्रवाल (हैदराबाद)
श्री दीप चन्द अग्रवाल (टाटा नगर)
श्रीमति निर्मल अग्रवाल (टी वी टॉवर)

गोकुलधाम सेवा संस्थान के सौभाग्यशाली आजीवन सदस्य

श्री गिर्राज खण्डेलवाल (अवन्तिका)
श्री पवन वर्मा (अवन्तिका)
श्रीमति शान्ता अरोड़ा (पहाड़गंज)

विशिष्ट सहयोगी

श्री जगदीश नारंग (सैक्टर-9, रोहिणी)
श्री रामनाथ अग्रवाल (सैक्टर-5, रोहिणी)
श्री सुधीर बंसल (सैक्टर-1, अवन्तिका)
श्री संदीप चौधरी (सैक्टर-16, रोहिणी)
श्री नितिन मित्तल (सैक्टर-11, रोहिणी)
श्री रोहित ढ़ीगरा (नोएडा)
श्री प्रेम नारायण गुप्ता (प्रशान्त विहार)
श्री संसार सिंह (सैक्टर-3, रोहिणी)
श्री राजेश पाठक (सैक्टर-5, रोहिणी)
श्री राजीव गुप्ता (बसई दारापुर)
श्री प्रवीन मल्होत्रा (एच.पी., पीतमपुरा)
श्री एच. के. गुप्ता (पंजाबी बाग एक्स.)
डॉ. आर. पी. शर्मा (विकासपुरी)
श्री पवन सर्राफ (चांदनी चौक)
श्री दरवेश बंसल (पंजाबी बाग)
श्री विजय गुप्ता (पंजाबी बाग)
श्री ज्ञान गोयल (नीलकंठ अपार्टमेंट)
श्री राजेन्द्र गर्ग (अशोक विहार)
श्रीमति सत्या देवी (प्रशांत विहार)
श्री महावीरप्रसाद टांटिया (मॉडल टाऊन)
श्री रमेश गुप्ता (शालीमार बाग)
श्री सुरेश बिंदल (शालीमार बाग)
श्री विनोद गोयल (वसुधा एन्कलेव)
श्री हरिओम अग्रवाल (सैक्टर-11, रोहिणी)
श्री लक्ष्मण अग्रवाल (वसुधा एन्कलेव)
श्री विजयपाल सिंह (अवंतिका)
श्री रामनिवास अग्रवाल (सैक्टर-11, रोहिणी)
श्री मनीष तायल (ट्रैकवर्ल्ड वेकेशनस)
श्री धनवीर सिंह (पश्चिम विहार)
श्री शंकरलाल अग्रवाल (सिंगरौली)
माता प्रसाद अग्रहरि (सिंगरौली)
श्याम मित्र मंडल (डी-15, सैक्टर-3, रोहिणी)
प्रिय सखी मंडल (प्रशांत विहार)
नमो शक्ति सेना (सैक्टर-16, रोहिणी)



ज्ञानी-अज्ञानी का भेद

श्रद्धेय संजीव कृष्ण ठाकुर जी

दूसरों को अपनी बात मानने के लिये बाध्य करना सबसे बड़ी अज्ञानता है। यहाँ हर आदमी को समझाने में लगा हुआ है। हम सबको यही बताने में लगे हैं कि तुम ऐसा करो, तुम्हें ऐसा नहीं करना चाहिए था। तुम्हारे लिये ऐसा करना ठीक रहेगा।

ये सब अज्ञानी की अवस्थाऐं हैं ज्ञानी की नहीं। ज्ञानी की सबसे बड़ी विशेषता यही है कि वह किसी को सलाह नहीं देता, वह मौन रहता है, मस्ती में रहता है, वह अपनी को मनवाने के लिए किसी को बाध्य नहीं करता हैं। इस दुनिया की सबसे बड़ी समस्या ही यही है कि यहा हर आदमी अपने को समझदार और चतुर समझता है दूसरे को मूर्ख।

हम खुद चाहे कितना ही झूठ बोले लें पर कोई दूसरा बोल दे तो हमें बर्दाश्त नहीं होता। हम दूसरों पर कितना भी गुस्सा कर लें पर जब कोई हम पर गुस्सा करे तब हमें बड़ा बुरा लगता है। ब्रह्मा जी की सृष्टि में पूर्ण तो कोई भी नहीं है। यहाँ सब में कुछ ना कुछ कमी हैं। इसकी सोच, सबके विचार, सबके उद्देश्य, सबके कार्य करने का तरीका अलग-अलग है।

अगर सारी दुनिया एक जैसी होती तो इसके दो परिणाम होते, या तो दुनिया स्वर्ग होती या नरक। विविधता ही इस दुनिया को खूबसूरत बनाती है। ज्ञानी इस प्रकार की चेष्टाओं में मुक्त होता है। वह किसी पर अपना अधिपत्य जमाने की कोशिश नहीं करता, ना ही वह किसी से टकराता है। लोग जैसे हैं उन्हें वैसे ही स्वीकार कर लेना सबमें बड़ा ज्ञान है। बुद्ध कहते हैं कि सत्य का पालन स्वयं करना तो धर्म है पर दूसरों से जबरदस्ती सत्य का पालन कराना हिंसा है।

केवल शरीर का स्वस्थ होना ही स्वास्थ्य नहीं है। स्वास्थ्य के लिए शरीर, मन एवं आत्मा के मध्य संतुलन होना आवश्यक है।



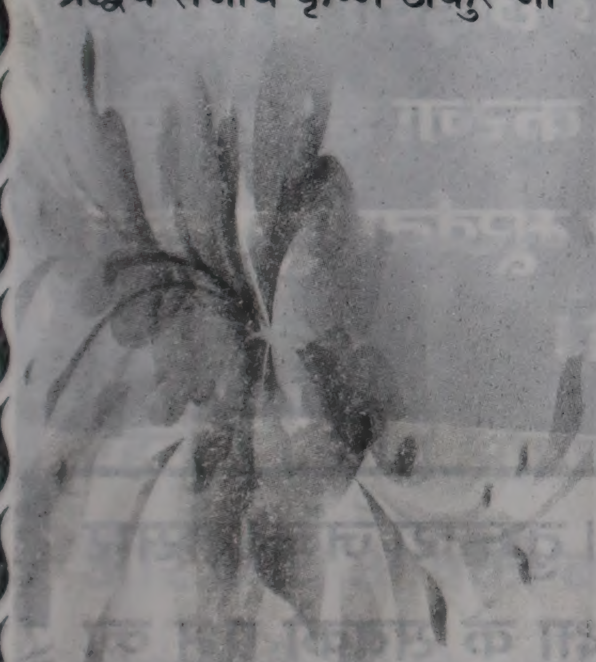
आपके निर्णय के पलों में ही आपकी तकदीर आकार लेती है।

– श्रद्धेय संजीव कृष्ण ठाकुर जी



करें विचार

श्रद्धेय संजीव कृष्ण ठाकुर जी



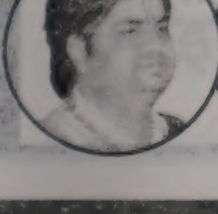
दु:ख में सुख खोज लेना, हानि में लाभ खोज लेना, प्रतिकूलताओं में भी अवसर खोज लेना इस सबको सकारात्मक दृष्टिकोण कहा जाता है। जीवन का ऐसा कोई बड़ा दु:ख नहीं जिससे सुख की परछाईयों को ना देखा जा सके। बहुत खोजने पर जिसमें अंश सुख के ना निकल आये। जिन्गी की ऐसी कोई बाधा नहीं जिससे कुछ प्रेरणा ना ली जा सके।

रास्ते में पड़े हुए पत्थर को आप मार्ग की बाधा भी मान सकते हैं और चाहें तो उस पत्थर को सीढ़ी बनाकर ऊपर चढ़ा जा सकता है। दुनिया में दो तरह के लोग हैं, एक वो जो सुख में भी दु:ख को खोजते रहते हैं दूसरे वो जिन्हें दु:ख में भी सुख नजर आता है। याद रखना जीवन का आनन्द वही लोग उठा पाते हैं जिनका सोचने का ढंग सकारात्मक होता है। जिन्हें दु:ख में भी सुख नजर आता है।

एक पेड़ से लाखों माचिस की तीलियाँ बनती हैं लेकिन केवल एक तीली लाखों पेड़ो को जला देती है। इसी प्रकार एक नकारात्मक विचार आपके लाखों सपनों को जला सकता है। इसलिए सकारात्मक सोचो और खुद पर भरोसा रखो। खुद पर भरोसा किये बिना मंजिल नहीं मिलेगी।

इस दुनिया में ज्यादा लोग इसलिए दु:खी नही कि उनके पास वस्तुएँ नहीं है अथवा किसी चीज की कमीं है अपितु इसलिए दुखी है कि उनके सोचने का ढ़ंग गलत है, नकारात्मक है। सकारात्मक सोचो, सकारात्मक देखो। इससे आपको अभाव में भी जीनें का आनन्द आ जायेगा।

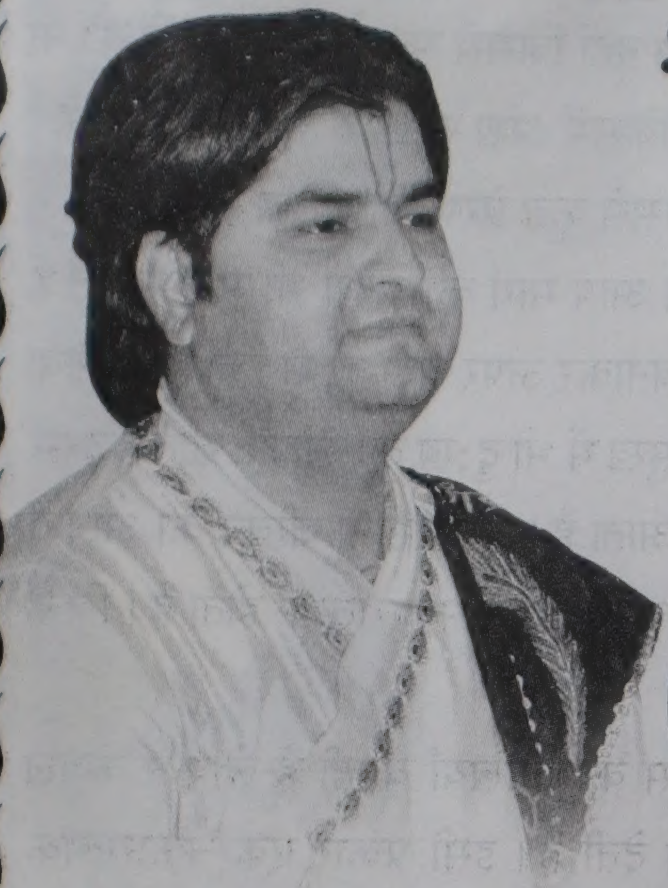
आपकी खुशी इस बात पर निर्भर करती कि आपके पास कितनी सम्पति है अपितु इस बात पर निर्भर करती है कि आपके पास कितनी सन्मति है। अपने दृष्टिकोण को सुधारने का निरन्तर प्रयास करते रहो। जीवन का रंग बदल जायेगा, जीवन का ढंग बदल जायेगा। शायद तब आप कह पाओगे कि "स्वर्ग कहीं और नहीं"।



जिन्हें खिलना है उन्हें काँटों से नहीं घबड़ाना चाहिये।

- श्रद्धेय संजीव कृष्ण ठाकुर जी

संजीव चिंतन



विज्ञान से बहुत सारे साधन मिल जायेंगे पर मन की शान्ति तो धर्म से ही मिलेगी। भीतर का सुख तो धर्म के मार्ग से ही मिलेगा। नये-नये साधन तो विज्ञान से ही मिलेंगे पर उनका सही उपयोग तो धर्म ही सिखायेगा। हमें विज्ञानी होने के साथ-साथ ज्ञानी होना भी जरूरी है।

शान्ति के लिये तुम्हें ना कहीं जाना है ना कहीं पहुँचना है। ना कुछ पकड़ना है ना कुछ छोड़ना है। तुम्हें स्वयं शान्त रहकर शान्ति का अनुभव करना है। शान्ति तो तुम्हें प्राप्त है। तुम अकारण के और मूर्खता पूर्ण कर्म करके स्वयं अपनी शान्ति भंग करते हो।

आपको पूरे संसार के लिये कार्य करना है। तुम्हारा जन्म संसार को देने के लिये ही हुआ है। बिना किसी अपेक्षा के सबको प्रभु का स्वरूप मानते हुये देने के यज्ञ में लग जाओ। एक ना एक दिन तो सब तुम्हें छोड़ना ही है।

संजीव चिंतन

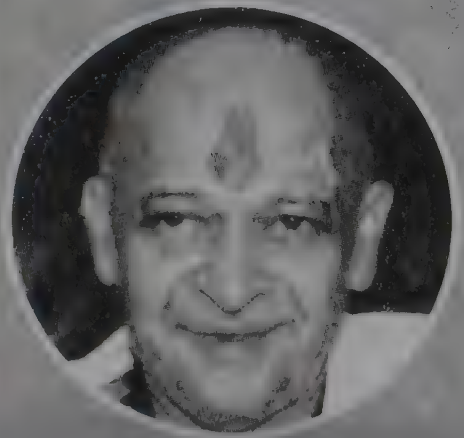
नये कार्य जरूर करो लेकिन समयवद्धता भी रखो। कब तक कार्य को पूर्ण करना है? नहीं तो इतने कार्य पैंडिग हो जायेंगे कि फिर कोई भी कार्य ढ़ंग से नहीं हो पायेगा। कार्य से आदमी उतना नहीं थकता जितना ये विचार करके थक जाता है कि उसे क्या-क्या करना है?



हैं सबके दुख एक से, मगर हौंसले जुदा-जुदा।
कोई टूटकर बिखर गया,
तो कोई मुस्कराकर चल दिया॥

निश्चित ही आप जितना क्रोध करते हैं, उतने ही तनाव में रहते हैं। क्रोध आपको तनाव देता है, क्रोध आपको विवाद देता है और क्रोध आपको बर्बाद भी कर देता है। यदि आप गुस्सैल और अहंकारी हैं तो आपको बर्बाद करने को ये दुर्गुण ही काफी हैं। फिर इस क्रोध को त्यागने में देरी कैसी ?





कृष्ण, गोपी वेणु और रास

पूज्यपाद
श्री डोंगरे जी महाराज
का चिन्तन

श्रीकृष्ण-

'कृष्' अर्थात् सत् एवं 'ण' अर्थात् आनन्द। इस प्रकार श्रीकृष्ण हैं सदानन्द यानी परब्रह्म। वेदकी ऋचाओं तथा मन्त्रों में परब्रह्म के सदानन्द-स्वरूप- रस-रूपका निरूपण किया गया है।

रसो वै सः। श्रीकृष्ण स्वयं रसरूप हैं। प्रेम के चिदानन्दघन दिव्य शरीर हैं। उनके देह-देही, गुण-गुणी, रूप-रूपी, नाम-नामी व लीला-लीला पुरुषोत्तम के स्वरूपों में कोई भेद नहीं। वे तो अजन्मा, अविनाशी और अच्युत हैं। श्रीकृष्ण का प्रत्येक अंग पूर्ण रूप से श्रीकृष्ण ही है। यों वह सर्वथा पूर्णतम हैं। उनकी यह रूप-माधुरी नित्य नवीन तथा नित्य सुन्दर है।

श्रीकृष्ण को स्वयं आकर्षित करने वाली यह रूपमाधुरी यदि गोपियों, गायों, हिरनों, वृक्षों, लताओं तथा व्रज-जनों को आकर्षित करे तो इसमें क्या आश्चर्य है?

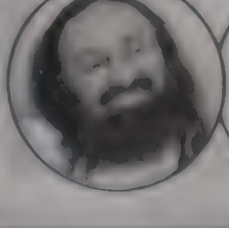
गोपी-जिस प्रकार भगवत्स्वरूप, चिदानन्दमय और दिव्य है, वैसे ही भगवन्मयी गोपियाँ दिव्य जगत् की अद्भुत भगवत् की अद्भुत शक्ति हैं।

प्रभु के मुख से प्रकट हुई वेद की ऋचाओं ने खूब तप किया और वे गोलोक धाम पहुँचीं। वहाँ उन्होंने आनन्दघन स्वरूप के साक्षात् दर्शन किये तथा दिव्य अलौकिक अखण्ड रासके भी दर्शन किये। उनकी रसानुभूति करने की आतुरता को देख प्रभु ने आज्ञा दी और उस आज्ञाको प्राप्तकर श्रीकृष्णावतार में वे ऋरचायें ही श्रुतिरूपा गोपियाँ बनीं।

दण्डकारण्य में श्रीसीतारामजी के दर्शनकर सोलह हजार ऋषि मन्त्र-मुग्ध हो गये। उनके हृदय में उत्कण्ठा जगी कि वे भी श्रीसीताजी की तरह श्रीराम से मिलने का सुख-लाभ करें। उनको भी प्रभु ने आज्ञा दी और वे ऋषि श्रीकृष्णावतार में ऋषिरूपा गोपियों के रूप में अवतरित हुए।

गोपियाँ दिव्य रसात्मिका हैं। भौतिक बन्धनों से वे मुक्त हैं। उनकी दृष्टि में केवल चिदानन्दरूप श्रीकृष्ण ही रहते हैं। उनके हृदय में श्रीकृष्ण को भी तृप्त करने वाला प्रेमामृत रहता है। गोपियाँ तो ब्रह्माण्ड के सात आवरणों को भेदकर प्रभु के चरणों को प्राप्त करने वाली सम्पूर्ण प्रगतिशील दिव्य जीवात्माएँ हैं।

वेणु- *मुरलिया कौन तप तैं कियौ।।*
सुन्दरश्याम कमलदल लोचन, अधरनकौ रस दियौ।।



प्रसन्न चित्त व्यक्ति में रचनात्मक शक्ति अधिक होती है।

श्रीश्री रविशंकर जी महाराज

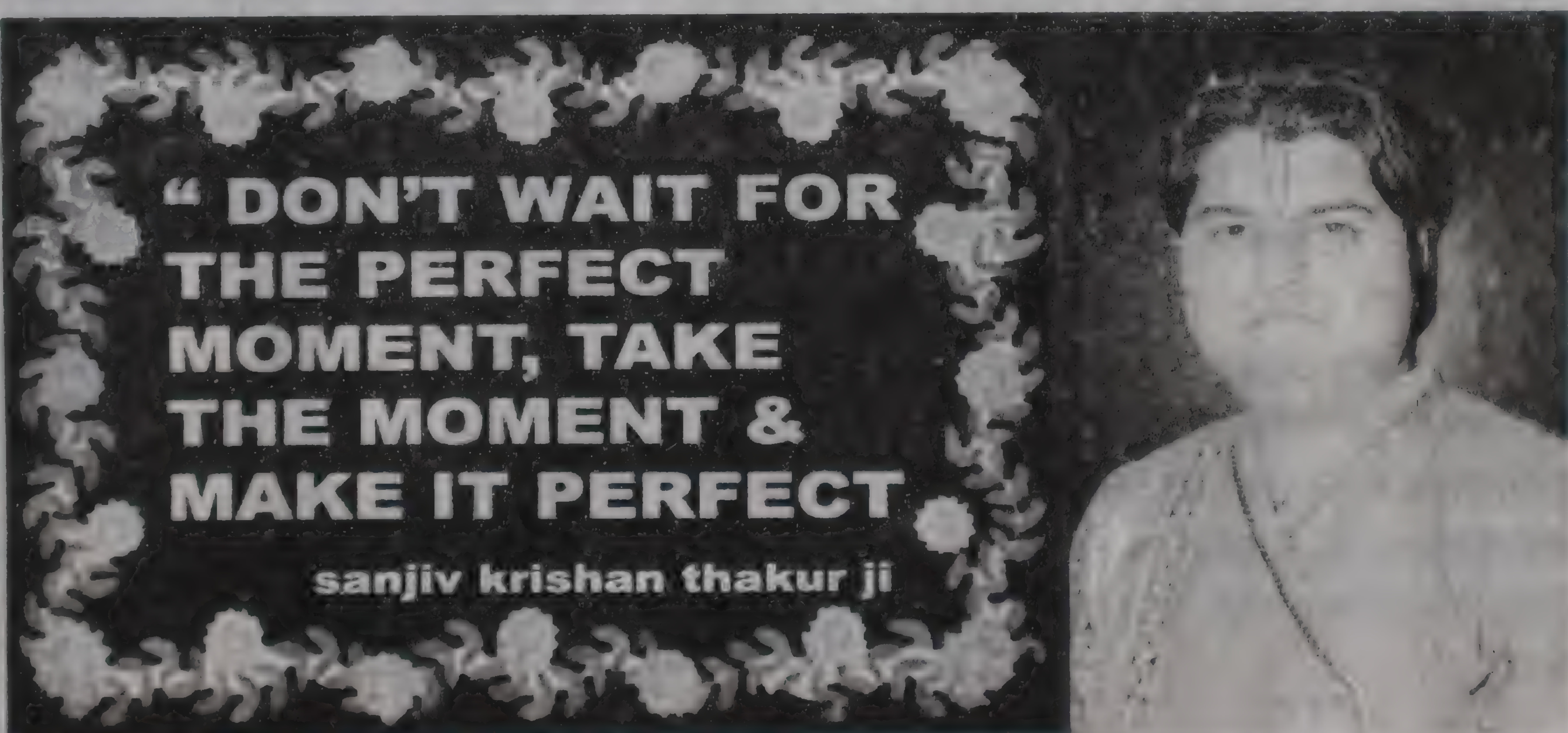
वेणु, पूर्वकाल में ब्रह्माजी मानसपुत्री सरस्वती थीं किन्तु उनकी रूपराशि से स्वयं ब्रह्माजी आकर्षित ही गये। तब इन्होंने ब्रह्माजी को रोकने के लिये चेतावनी दी कि "मैं तो सर्वेश्वर की बन चुकी हूँ।" यह सुनकर ब्रह्माजी को क्रोध आया और उन्होंने सरस्वती जी को शाप दिया कि जड़ बाँस के रूप में तुम्हें जन्म लेना पड़ेगा तब उन्होंने प्रभु-प्राप्ति के लिए एक हजार वर्षों तक तपस्या की। प्रभु प्रसन्न हुए और कृष्णावतार में अपनी सहचरी बनाने का वरदान उन्होंने सरस्वतीजी को दिया। तब उन्होंने ब्रह्माजी के शापको यादकर प्रभु से कहा ' मुझे तो जड़ बाँस के रूप में जन्म लेने का शाप मिला है।' यह सुनकर प्रभुने कहा - 'भले ही तुम्हारा जन्म जड़रूप में हो, फिर भी मैं तुम्हें स्वीकार करूँगा। तुम्हारी जड़ता में मैं ऐसी प्राण-शक्ति भर दूँगा कि तुम विचित्र चेतना का अनुभव करोगी और अपनी उस चेतना के द्वारा तुम अनेक जड़ों को चैतन्य बनाये रख सकोगी।'

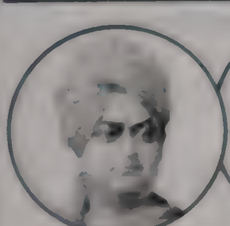
उसके पश्चात् सरस्वती जी का जन्म वंशी के रूप में हुआ और वे प्रभु की प्यारी वंशी बन गयीं।

रास-अपनी निजस्वरूपा गोपियों तथा आह्लादिनी शक्ति श्रीराधा के साथ हुई प्रभु की दिव्यातिदिव्य क्रीड़ा का नाम है रास। रास में प्रभु स्वयं आस्वाद्य, आस्वादक, लीला, धाम, आलम्बन, उद्दीपन आदि अनेक रसों के रूप धारण करते हैं तथा अनन्त रसका आस्वादन करते हैं।

प्रभु की यह दिव्य लीला, दिव्य धाम में तो निरन्तर चलती रहती है किन्तु उसका आनन्द, प्रेमी भक्तों तथा वैष्णवों को भी मिले- ऐसी भावना जब प्रभु के अन्तर में जागती है तब वे अपने दिव्य धाम के साथ पृथ्वी पर उतरते हैं तथा दिव्य रासलीला करते हैं। उस लीला का स्मरण-चिन्तन करके तथा उसमें सम्मिलित होकर अधिकारी भक्त कृतकृत्य हो जाते हैं।

रसात्मक ब्रह्मके- रसेश श्रीकृष्ण के अपनी शक्तियों के साथ किये गये इस रास-रमण को भागवतकार ने अपनी अनुपम प्रतिभा तथा क्षमता से रसपूर्ण, हृदयंगम तथा लोकोत्तर बना दिया है।





सपने जब तक सच नहीं होते जब तक आप जागकर काम नहीं करते।

-स्वामी विवेकानन्द जी

'मैं' से मुक्ति



स्वामी श्री अवधेशानन्द गिरि जी महाराज

जापान में एक परमज्ञानी तपस्वी फकीर थे- नानहेन। वे मोह-माया से परे निरपेक्ष और त्यागी पुरुष थे। एक बार एक व्यक्ति उनके पास आया और बोला, ''मैं संन्यास लेने के लिए आपसे दीक्षा पाना चाहता हूं। इसके लिए मैं अपना सब कुछ छोड़ आया हूँ।''

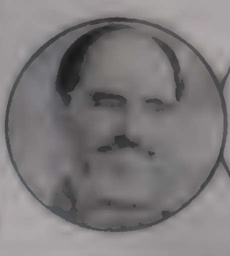
नानहेन ने उसे ध्यान से देखा और पूछा, ''क्या तुम बिल्कुल अकेले हो ?'' वह बोला, ''आप स्वयं देख लें कि मेरे साथ कोई नहीं है।''

नानहेन बोले, ''अपनी आंखें बंद करो और अपने अंतर्मन में झाँककर देखो कि वहाँ कोई और तो नहीं है ? जाओ, वहाँ सामने वटवृक्ष की छाया में बैठकर अंतर्मुखी हो जाओ।''

वह व्यक्ति नानहेन के आदेशानुसार वटवृक्ष की छाया में बैठकर ध्यान करने लगा। उसने आंखें बंद कर अपने हृदय में झांका तो पाया कि कि जिस परिवार को पीछे छोड़ आया था, वह तो वहाँ मौजूद था। परिजनों की भीड़ भी वहीं थी। नानहेन ने ध्यानस्थ व्यक्ति के पास आकर पूछा, ''क्या तुम भीड़ को सचमुच पीछे छोड़ आए हो ?'' उस व्यक्ति ने इंकार में सिर हिलाया।

नानहेन ने कहा, ''अरे भाई जल्दी करो, संन्यास लेना है तो सभी को छोड़ आओ।'' इतना कहकर नानहेन ने अपनी कुटिया में जाकर भीतर से दरवाजा बंद कर लिया। काफी देर तक वह व्यक्ति अपने अंतर्मन में जूझता रहा। फिर उसे ऐसा लगा कि शायद अब उसने सभी को विस्मृत कर दिया है। ऐसा सोचकर उसने नानहेन के द्वार पर दस्तक दी। नानहेन ने कहा, ''कौन है ?'' वह व्यक्ति बोला, ''मैं हूँ।'' तब नानहेन ने उसे जीवन दर्शन समझाया, ''अभी भी तुम्हारे साथ है। यह 'मैं' कौन है ? उसे भी छोड़ कर आओ। यदि तुम वास्तव में इस भीड़ को छोड़ सके तो फिर यहाँ आने की आवश्यकता ही नहीं रह जाएगी, क्योंकि फिर मैं भी तुम्हारे लिए भीड़ बन जाऊंगा। 'मैं' से मुक्ति पा लो, फिर तुम्हें सन्यास स्वयं प्राप्त हो जाएगा।''

★★★



जहाँ दूरदर्शिता नही वहाँ पतन निश्चित है।

—श्री रमेश भाई ओझा

स्वच्छता तन की, मन की या आँगन की

जब दीपावली आती है तब हम घर, आँगन, दुकान व अन्य सभी प्रतिष्ठानों में सफाई अभियान चलाते हैं, एक दम चमक आ जाती है। रंग रोगन कराते हैं। पेन्टस कराते हैं। पर्दो को बदलते हैं। पता है ऐसा क्यों करते हैं क्यों कि हम अपने घर को स्वच्छ रखना चाहते हैं अगर कोई पड़ोसी नाते रिश्तेदार आये तो प्रशंसा सुनना पसन्द है। वैसे अगर हमें कूड़ा डालने को उचित स्थान ना मिले तो उस गंदगी को हम पड़ोसी के द्वार पर भी डाल सकते हैं।

सजने सँवरने के लिये हम इस तन को साबुन से साफ करेंगे। कपड़े भी साफ पहिनेंगे। इत्र लगायेंगे। मत पूछो क्या-क्या करेंगे ? इतना सब कुछ करने के बाद कभी सोचा है कि मन में भरी इस गंदगी की सफाई कैसे करें। वह कैसे हागी ? राम नाम के साबुन से, भगवान की कथा श्रवण से, प्रभु के गुण गान से। मन कहता है यह सब कुछ तो मैं प्रतिदिन करता हूँ। परन्तु वास्तविकता कुछ और है। हम मन्दिर जाते हैं भय से, कहीं हमारा कोई अनिष्ट न हो जाये, हमारे पास जो है कहीं लुट न जाये, आगे यह तिजोरी और भरे ताकि कई पीढियों तक नाती पोते ऐश मौज भोगते रहें जब हम मन्दिर जाते हैं तब लोग कहते हैं आप तो वाकई प्रभु के भक्त हो वह प्रशंसा हमें प्रिय लगती है, परन्तु मन्दिर से आने के बाद घर, परिवार, पड़ौसी, रिश्तेदार, आफिस वहाँ वह भाव क्यों नहीं रहता ? गोस्वामी तुलसीदास जी ने श्री राम चरिम मानस में कहा है।

निर्मल मन जन सो मोहि पावा, मोहि कपट छल छिद्र न भावा।

हम मन्दिर गये परन्तु मन्दिर में बैठा भगवान कह रहा है कि मुझे निर्मल मन चाहये। अब निर्मल मन बाजार में तो मिलता नहीं है जो छल, कपट त्यागे दूसरों की निंदा न करे। प्रशंसा व निंदा में संग रहे तब निर्मल मन बने। बड़ा कठिन कार्य है। ऋषि मुनि भी इस मकड़ जाल में फँस जाते हैं। मेरा सिर्फ इतना कहना है कि जितना संभव हो उतना प्रयास करो। धीरे-धीरे हरि चर्चा सुहाने लगेगी, बुराईयों से घृणा होने लगेगी।

रहिमन पिछले पाप सों हरि चर्चा न सुहाय

हमारा मन काम, क्रोध, लोभ, मोह, द्वेष ईर्ष्या आदि की गंदगी से भरा हुआ आप इसे यूं समझो कि एक बाल्टी में गोबर भरा हुआ है। गोबर खला दिया परन्तु बाल्टी तो गंदी है उसको साफ करने के लिये पानी डाला। वह पानी भी उस गोबर के प्रभाव से गंदा हो गया उसे खाली कर फिर पानी डाला। 3-4 बार में वह बाल्टी खाली हो गयी बिल्कुल साफ हो गयी ठीक इसी प्रकार इस मन रूपी बाल्टी में राम नाम रूपी चरणामृत डालते रहो। मन की गंदगी दूर होगी हरि चर्चा सुहाने लगेगी। जिस दिन मन स्वच्छ हो जायेगा तब तन अथवा आँगन तो क्या सम्पूर्ण संसार स्वच्छ नजर आने लगेगा। ★★★



सफलता का सूत्र- सही काम सही तरीके से सही समय पर करें।

-डा0 श्री कैलाश मानव

अपने गिरबां में झाँको

सत्यभान शर्मा
संस्थापक ट्रस्टी, समर्पण गौशाला

एक व्यक्ति किसी सदगुरू के पास गया और बोला कि मुझे दीक्षा दे दो। गुरू ने कहा कि दो थैले दे रहा हूँ। प्रतिदिन रात को सोते वक्त 15 मिनट चिन्तन करना कि आज तुमसे क्या गलत हुआ ? और दूसरों ने तुम्हारे साथ क्या गलत किया ? किन बातों से तुमने दूसरों को आहत किया और वे क्या कारण थे जिनसे तुम आहत हुए उन कारणों को लिखकर एक थैले में डाल देना जिनसे तुम आहत हुए उन्हें दूसरे थैले में डाल देना। मेरे पास ठीक एक माह बाद आना में तम्हें दीक्षा दूगाँ। परन्तु वह व्यक्ति बहुत चालाक था। अपने वाला थैला तो छुआ ही नहीं जिन्होंने उसकी बात नहीं मानी अथवा जिस किसी ने उसे कष्ट पहुँचाया उन्हें थैले में लिखकर रखता रहा।

एक माह बाद जब वह सदगुरू के द्वारा पहुँचा तो उसी थैले को लेकर पहुँचा जिसमें दूसरों की कमियों को लिखता रहा। सदगुरू ने पूछा कि दूसरा थैला कहाँ है ? क्या तुमसे कोई कमी नहीं हुई ?

सदगुरू बोले-दीक्षा वह लिया करता हैं जो भगवद् शरण में जाना चाहता है तथा सदगुरू ज्ञान रूपी साबुन से शिष्य अज्ञान रूपी गंगी को साफ करना चाहता है परन्तु तुम तो मुझसे भी अधिक महान हो इसलिए मुझे आपसे दीक्षा लेनी चाहिए। वह व्यक्ति बड़ा लाचार हुआ और पैरों में गिर पड़ा तब सदगुरू ने बताया कि व्यक्ति का स्वभाव है दूसरों के अवगुण देखना। उनकी दृष्टि दोष ग्राही होती है गुण ग्राही नहीं, आप भँवरे और मक्खी को देखो। भँवरा फूल तलासेगा और मक्खी गंदगी खोजेगी।

"दृष्टि रेवे सृष्टि" जैसी दृष्टि वैसी सृष्टि। यदि तुम्हारे द्वार पर कूड़ा पड़ा है तो पड़ोसी साफ करने नहीं आयेगा तुम्हें खुद ही साफ करना होगा तभी तुम्हारा द्वार अच्छा लगेगा। इसी तरह अपने अवगुणों को स्वयं दूर करो तभी तुम्हारा चित्त निर्मल हो पायेगा फिर तुम्हें दूसरों में अवगुण नजर नहीं आयेगा इसलिये स्वयं अपने गिरेबां में झाँको और अवगुणों को दूर करो। गंदी दीवार पर रंग रोगन भी असर नहीं डालेगा साफ दीवार पर ही पेन्ट जमता है। तुम्हारा चित्त निर्मल हो जायेगा तभी सदगुरू की बात तुम्हारे चित्त में बैठेगी।

***

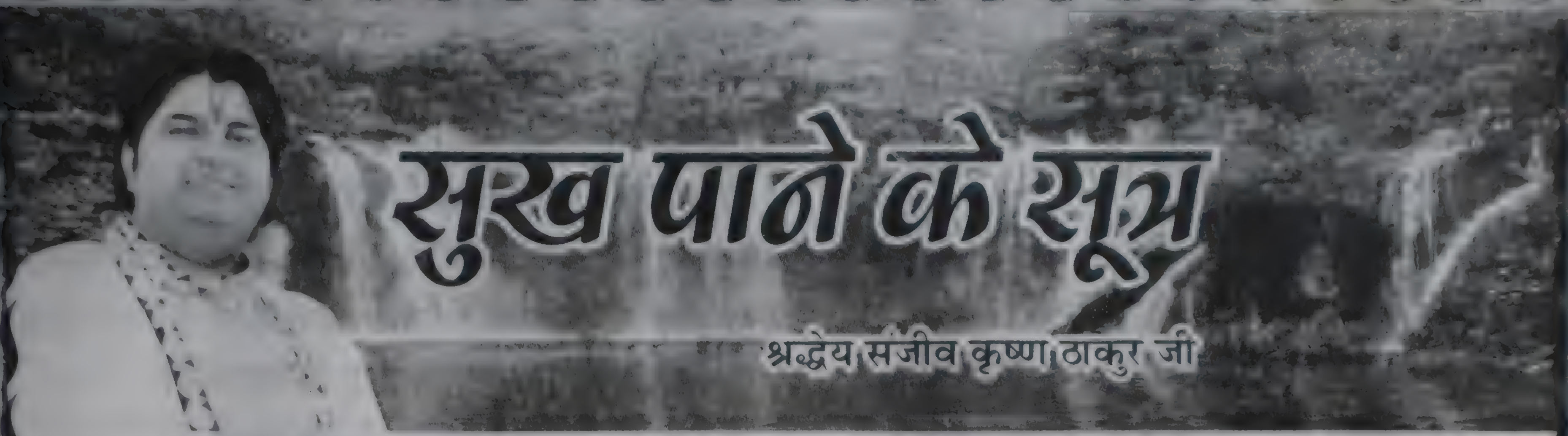


जिस दिन तुम्हारे कारण माँ-बाप की आँखों में आँसू आते हैं,
याद रखना, उस दिन तुम्हारा किया सारा धर्म....
आँसू में बह जाता है।



पत्थर भले ही आखिरी चोट से टूटता है परन्तु पहली चोट भी व्यर्थ नहीं जाती।

- आचार्य विनोबा भावे जी



सुख पाने के सूत्र

श्रद्धेय संजीव कृष्ण ठाकुर जी

आत्मदेव को जब पुत्र धुन्धकारी के द्वारा दुख प्राप्त होता है तब वह पुत्र गोकर्ण की शरण में जाता है। मस्तक झुकाकर उनसे पुछा है कि मुझे शान्ति प्राप्त हो इसके लिये क्या करूँ ? भारत की भूमि धन्य है जहाँ पिता पुत्र के सामने हाथ जोड़कर भीतर की शान्ति का उपाय पूछ रहा है। यहाँ ज्ञानी को उसकी उम्र से, जाति से, पद से, बल से, धन से, बड़ा नहीं, अपितु उसके ज्ञान के कारण बड़ा माना गया है।

आज सबको शान्ति की आवश्यकता है। **महानगरों में बड़ी ऊँची- ऊँची इमारतें, लम्बी गाड़ियाँ, अकूत सम्पत्ति सब हमारे पास हैं फिर भी हम उदास हैं।** हमारे वृन्दावन के एक महात्मा कहा करते है, लोगों के पास टी. वी. सैट है, सोफा सैट है, ज्वैलरी सैट है, मोबाइल सैट है फिर भी लाइफ अपसैट है। आँकड़े बताते हैं भारत में पिछले कुछ वर्षों में डिप्रैशन के मरीज अत्याधिक संख्या में बढ़े हैं। लोगों को नीद नहीं आती, चिड़चिड़े हो गये हैं। इतनी सारी सुख सुविधाओं के बाद तो उन्हें सुखी होना चाहिऐ था फिर दुखी क्यों है ?

सुख, साधनों से नहीं मिलता, सुख तो भीतर का विषय है। भीतर की उपज है, भीतर ठहराव आता है, स्थिरता आती है तभी शाश्वत सुख प्रगट होता है।

हम सब अपने विचारें के कारण दुखी हैं हम जैसे हैं उसमें किसी दूसरे का योगदान कदापि नहीं है, हम स्वयं के उत्पादन हैं। स्वयं की निष्पत्ति हैं। 90% अपनी इस स्थिति के लिये हम स्वयं जिम्मेदार हैं। बाकी 10% के लिये बहुत लोग जिम्मेदार हो सकते हैं हमे अपने भीतर झाँकने की, चिन्तन करने की, आत्मावलोकन करने की आवश्यकता है, दुख बाहर से नही भीतर से प्रगट हो रहा है।

जब भीतर झाँकोगे तो पता चलेगा कि दुख तुम्हारे भीतर पहले से ही भरा हुआ था सामने वाले ने तो बस कुरेदा है। किसी वस्तु का अभाव तुम्हारे भीतर गहरे में पहले से ही बैठा हो तो किसी के द्वारा उस अभाव का स्मरण कराने मात्र से ही आप विचलित हो जाओगे और दुखी हो जाओगे। तुम्हें लगेगा कि सामने वाले ने तुम्हें कष्ट पहुँचाया है, वास्तविकता में ऐसा बिल्कुल नहीं है। तुम्हारे भीतर अभाव पहले से ही था।

किसी व्यक्ति ने कोई बात कही और आप क्रोध में आकर चिल्लाने लगे। आपने अपने क्रोध का ठीकरा भी दूसरे के माथे पर मड़ दिया कि मुझे क्रोध कभी नहीं आता पर आज इसने दिला दिया। सरासर झूठ! बाहर बही निकलता है जो आपके भीतर भरा होता है। आपके भीतर गन्दगी होगी तो गन्दगी निकलेगी, बन्दगी होगी तो बन्दगी निकलेगी।

महत्वपूर्ण यह है कि आपके भीतर क्या भरा हुआ है और क्या रोज भरने में लगे हैं। यह जिस दिन आपको



जिन्दगी बदलने के लिये लड़ना पड़ता है और आसान करने के लिये समझना पड़ता है।

- श्रद्धेय संजीव कृष्ण ठाकुर जी

समझ आयेगा उसी दिन आपके दुख के बादल छटने लगेंगे और आप प्रेम-मस्ती में झूमने लगोगे। 7 दिन का यह प्रेमानुष्ठान गन्दगी को बाहर निकालने के लिये और प्रेम शान्ति स्थापित करने के लिये ही है।

विरक्त बनें:-

गोकर्ण जी ने पिता आत्मदेव को 2 सूत्र दिये हैं।

'सुखमस्ति विरम्तस्य मुनेरेकान्त जीविन:'

2 लोगों को सुख जल्दी प्राप्त होता है पहला है विरक्त! विरक्त का अर्थ है अपेक्षा छोड़ना।

हम अपनी अपेक्षायों के कारण दुख पाते हैं। प्रकृति के सन्मुख जब हम अनावश्यक माँग रखते हैं और बह पूर्ण नहीं हो पाती तब हमें दुख प्रतीत होता है। हम अपनी चाह के कारण ही दुख पा रहे हैं, चाह ही हमें आह दे रही है। सम्मान की चाह हमारा अपमान कराती है। दो व्यक्ति जव एक दूसरे से मिलते हैं तब एक को लगता है कि वह बड़ा है उसका सम्मान पहले हो, ऐसा नहीं होता है तब वह दुख अनुभव करता है।

आदमी को अपमान का दुख तभी महसूस होता है जब वह अभिमानावस्था में होता है। अभिमान से रिक्त होकर कभी आप कहीं पर भी जाना आपको कोई दुख अनुभव नहीं होगा।

हमें लगता है हम जहाँ भी जायें हमारी पूछ हो। हम सबके आकर्षण का केन्द्र बने रहें। हमारी प्रशंसा में लोग मंच से बोलें। ऐसी चाह, अपेक्षायें ही हमारे दुख का कारण बन रही है।

आपको जब किसी से कुछ चाहना होता है, पाना होता है तब आप सामने वाले के सामने दरिद्र बन जाते हैं, छोटे बन जाते हैं, भिखारी हो जाते हैं। यह किसके कारण हुआ, आपकी चाह के कारण-

महात्मा शहंशाह ने बड़ा प्यारा लिखा।

"चाह गई चिन्ता गई मनुआ वेपरवाह।
जिसको कोई चाह नहीं वह जग शहंशाह।।"

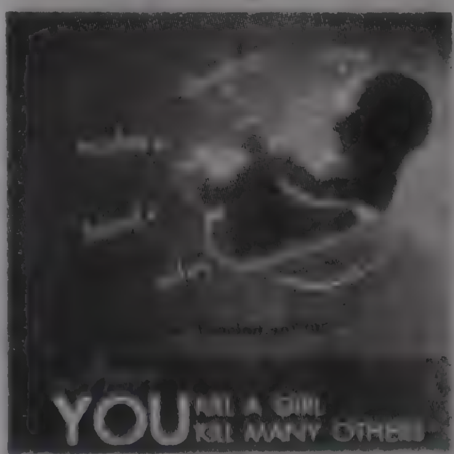
आप तो शहंशाह हो महाराज। कुछ पाने की लालसा ने आपको भिखारी वना दिया है। तो सुख पाने का प्रथम सूत्र है चाह छोड़ विरक्त वनें।

दूसरा सूत्र- मुनि बनें

सुखी होने का दूसरा सूत्र महापुरूषों ने हमें दिया है हम मुनि बनें। मुनि का मतलब ये मत निकालना कि जंगल में जाकर हमें रहना होगा। मुनि कौन है? जिसने मन का अनुमोदन कर लिया हो, जो मन को शासित करना सीख गया हो। जिसने अपने मन को जीत लिया हो। जो मन के बहकावे में ना आये वह मुनि है। हम जितेन्द्रिय बनें, मन को विवेक की लगाम से शासित करें।

अर्जुन ने भी भगवान से यही कहा कि मन ही चंचल है। शास्त्रों ने कहा कि मन ही बन्धन का कारण है और मन ही मुक्ति का कारण है।

जिसने अपने मन को भगवत चरणों में लगा दिया है जिसका मन सहज, सरल, निष्कपट, निष्कलंक और निर्दोष हो गया है वह व्यक्ति शीघ्र ही सुख शान्ति को प्राप्त कर लेता है।



एक **कन्या भ्रूण** की हत्या करते ही जाने अनजाने कितने ही रिश्तों का खून हो जाता है.



अगर लगने लगे कि लक्ष्य हासिल नहीं हो पायेगा तो लक्ष्य को नही अपने प्रयासों का बदलें।

- श्रद्धेय संजीव कृष्ण ठाकुर जी

मधुर वचन हैं औषधि

जो हर समय मधुर बोलता है, उसे कोई रोग़ नही होता। जो सत्य बोलता है, उसे कभी चिन्ता नही सताती। जो हितकारी वचन बोलता है, उसके सामने कोई शत्रु नही खड़ा होता। जो मितभाषी है यानी जो बहुत कम बोलता है, उसकी शक्तिका क्षय नहीं होता। जो बहुत अधिक बोलता है, उसकी शक्तिका ह्रास होता है। फिर यह तो साधारण नियम ही है कि जो व्यक्ति बहुत अधिक बोलता है, अधिकतर झूंठ ही बोलता है, सच तो वह बोल ही नही सकता सत्यवादी वही हो सकता है, जो मितभाषी है। हमेशा सत्य बोलिए तथा मधुर बोलिये

जहाँ स्वार्थ होता है, वहाँ तो सभी मधुर बोलते हैं। स्वार्थके लिए यदि कोई मधुर बोलता है तो उसकी वाणीकी मिठास सच्ची मिठास नही है। बहुतसे ब्यापारी बहुत मीठी-मीठी बातें करते है। वे ग्राहकसे कहते हैं-'दुकान आपकी है।' लेकिन ऐसा कहने वाले व्यापारी बिलका पैसा लेनेमें कोई कमी नही करते।

श्रीकृष्ण-प्रेम जिसके ह्रदयमें जागता है, वह हर समय मधुर ही बोलता है। सामान्य नियम ऐसा है कि जीव जिससे बहुत प्रेम करता है, वह उस प्रिय व्यक्ति जैसा ही हो जाता है। आप किसी व्यासना आदमी से बहुत प्रेम करें तो आपमें भी उसके व्यसन आ जायेगे। यदि आप किसी लोभी व्यक्तिसे प्रेम करे तो धीरे-धीरे आप भी लोभी बन जायेगे। जो लोग श्रीकृष्ण से अत्यन्त प्रेम करते हैं, उन जीवो में धीरे-धीरे श्रीकृष्णके दिव्य सद्गुण आते चले जाते हैं।

श्रीकृष्ण अत्यन्त मधुर बोलते हैं। वे कड़वे शब्द तो बोल ही नही सकते। श्रीकृष्ण-प्रेम आपकी वाणीमें भी मधुरता लायेगे। महापुरुषोने श्रीकृष्ण-प्रेमको पंचम पुरुषार्थ माना है। धर्म, अर्थ, काम तथा मोक्ष-ये चार पुरुषार्थ हैं। श्रीकृष्ण-प्रेम इन सबसे श्रेष्ठ पंचम पुरुषार्थ है।

परमात्माको मानना, उनकी थोडी सेवा करना और इस प्रकार वैष्णव बन जाना आसान बात है परन्तु श्रीकृष्ण-प्रेमी होना कठिन है। यह जीव जब अनेक जन्मों तक सेवा, प्रभु-स्मरण, सत्कर्म आदि में लीन रहता है, तभी उसमें प्रभु-प्रेम जागता है। जिसके ह्रदयमें भगवत्प्रेमी प्रकट होता है, उस जीवके दो प्रधान लक्षण होते हैं। एक तो उसे ससारके सम्पूर्ण सुख तुच्छ लगते हैं और दूसरे उसका ह्रदय विशाल और कोमल हो जाता है। ऐसा भगवत्प्रेमी हर समय वाणी ही बोलता है। उसे कड़वे शब्द बोलना आता ही नहीं।

भगवानको मधुर वाणी अत्यन्त प्रिय है। जो व्यक्ति बहुत मधुर बोलता है, वह श्रीकृष्णको बहुत अच्छा लगता है। वंशी अत्यन्त मधुर बोलती है। वंशीमें एक बहुत बड़ा सद्गुण है। वह सज्जन और दुर्जन—सभी से

मधुर बोलती है। वंशीका मधुर स्वर सुनकर हिरन भी दौड़ा चला आता है तथा विषधर नाग भी उसके मधुर नादको सुननेके लिये दौड़ा आता है। कस्तूरी-मृग, सज्जन के स्वरूपमें है तथा विषधर नाग दुर्जनके स्वरूपमें। वंशीका स्वर सुनकर सज्जन-दुर्जन—सभीको आनन्द होता है। वंशी कभी भी कड़वा स्वर निकाल ही नही सकती। कठोरता से वह नहीं बोलती। इसलिए प्रभु इसे अपने हस्तकमलों में रखते हैं।



क्रोध से शुरू होने वाली हर बात लज्जा पर समाप्त होती है।

मुनि पुलक सागर जी

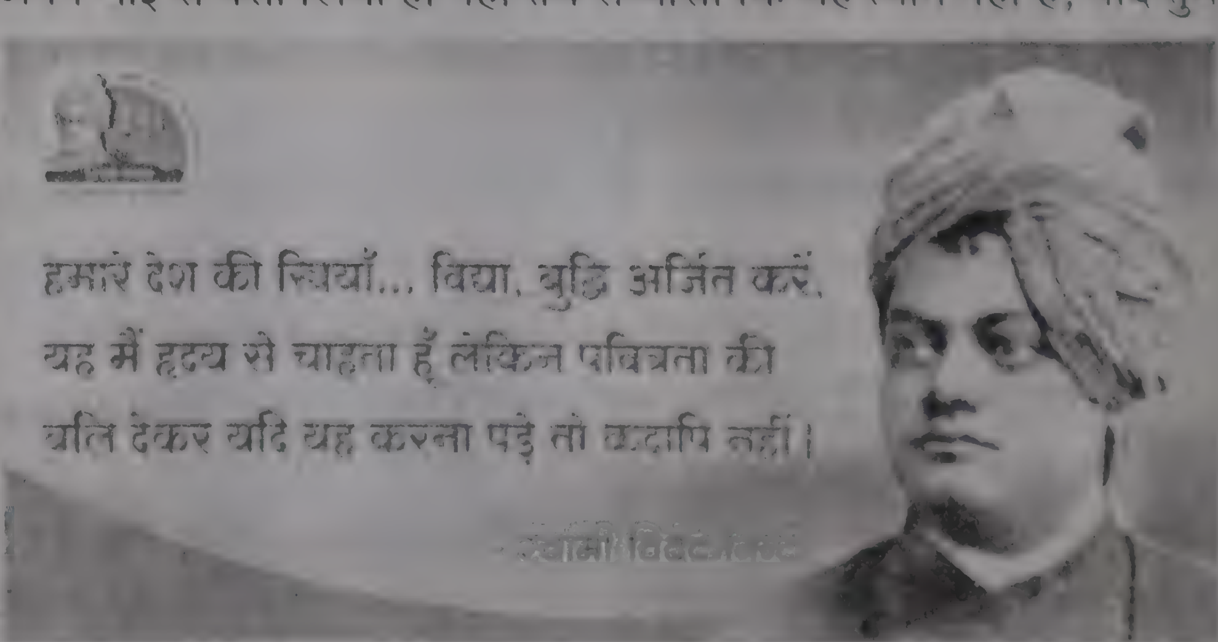
त्याग की तपस्या

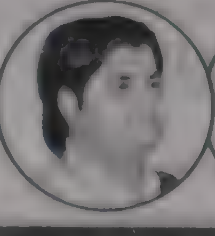
सत्यभान शर्मा

संस्थापक ट्रस्टी, समर्पण गौशाला

एक व्यक्ति के दो बेटे थे। बड़ा खेती करता था और छोटा साधु संतो के साथ रहता था। छोटे बेटे के अन्दर उसके गुरूदेव ने भक्ति, समर्पण व त्याग का भाव कूट-कूट कर भर दिया था। लिहाजा वह सब कुछ छोड़कर जंगल में गुरू की कुटिया पर रहने लगा। जब इनके पिता को एसा लगा कि मैं मृत्यु के निकट हूँ। शरीर साथ नहीं दे रहा तब उन्होंने बड़े पुत्र को बुलाया और कहा कि अपने छोटे भाई को और बुलालो मैं अपने जीवन की जमा पूँजी को दोनो भाईयों में बराबर-बराबर बाँट कर जाना चाहता हूँ। तुम्हारी स्वर्ग वासी माता को मैंने ऐसा करने का वचन दिया था। बड़े भाई ने छोटे संत भाई को संदेशा भिजवाया कि पिताजी शरीर छोड़ने वाले हैं तुम एक बार मिल जाओ। संत बेटा ने कहा मैं घर छोड़ चुका हूँ अब मेरा किसी से कोई नाता नहीं कुछ दिन बाद पिताजी गोलोक धाम पधारे व बड़े पुत्र को कह गये मैंने जो कुछ तुमको दिया है उसका आधा हिस्सा अपने छोटे भाई को दे देना।

कभी सदगुरू आये उनके साथ उनका पुत्र भी आया। लोगा चर्चा करने लगे कि इसने तो पूर्ण वैराग्य धारण कर लिया, पिता की मृत्यु की खबर पाकर भी नहीं आया। बड़े भाई ने पिता द्वारा दी गयी आधी अमानत जो उसने ठुकरा दी और कहा कि धन बला है इससे संतो को दूर रहना चाहिए और सदगुरू के साथ लौट गया परन्तु जब वह साधु समाज में बैठता था तब यह चर्चा अवश्य किया करता था कि मेरे पिता ने इतना धन व सम्पति मेरे लिऐ छोड़ी थी। मैंने ठुकरा दी लोगों ने कहा कि यह तो वाकई में ही वैरागी बन गया। पिता की अंत्येष्टि में नहीं गया तथा हिस्स भी छोड़ आया। उस छोटे बेटे को शौक लगा अपनी बड़ाई सुनने का और जब कोई नहीं करता था तो स्वयं चर्चा आरम्भ कर देता था। एक दिन एक सन्यासी ने पूछा कि तुम अपना हिस्सा कहाँ दान कर आये हो। वह बोला कि मैंने अपने भाई से पैसा लिया ही नहीं तब सन्यासी कि यह त्याग नहीं है, यदि तुम उस हिस्सा को कहीं अन्य दान कर देते तब तुम त्यागी माने जाते। लेकिन एक तो तुमने समुचित दान नहीं किया उसके ऊपर प्रशंसा और सुनना चाहते हो। त्याग करने के बाद यदि त्यागी हुई बात, सम्पत्ति का चिन्तन में चलता रहा तो सब व्यर्थ है। ***





एक बुरा शब्द सारे अच्छे परिणामों को बुरे में बदल देता है।

– श्रद्धेय संजीव कृष्ण ठाकुर जी



जनेऊ कान पर क्यों चढ़ाते हैं



जनेऊ को अपवित्र होने से बचाने के लिए लघुशंका एवं दीर्घशंका के समय उसे दाहिने कान पर चढ़ाने का नियम है! दाहिने कान पर जनेऊ चढ़ाने का वैज्ञानिक कारण है, आयुर्वेद के अनुसार, दाहिने कान पर 'लोहितिका' नामक एक विशेष नाड़ी होती है, जिसके दबने से मूत्र का पूर्णतया निष्कासन हो जाता है। इस नाड़ी का सीधा सम्पर्क अण्डकोष से होता है। हर्निया नामक रोग का उपचार करने के लिए डॉक्टर दाहिने कान की नाड़ी का छेदन करते हैं। एक तरह से जनेऊ 'एक्यूप्रेशर' का भी काम करता है। पूर्व में बालक की उम्र आठ वर्ष होते ही उसका यज्ञोपवीत संस्कार कर दिया जाता था। वर्तमान में यह प्रथा लोप सी हो गयी है। जनेऊ पहनने का हमारे स्वास्थ्य से सीधा सम्बन्ध है।

विवाह से पूर्व तीन धागों की तथा विवाहोपरान्त छह धागों की जनेऊ धारण की जाती है। पूर्व काल में जनेऊ पहनने के पश्चात ही बालक को पढ़ने का अधिकार मिलता था। मल-मूत्र विसर्जन के पूर्व जनेऊ को कानों पर कस कर दो बार लपेटना पड़ता है। इससे कान के पीछे की दो नसें जिनका सम्बन्ध पेट की आँतों से है। आँतों पर दबाब डालकर उनको पूरा खोल देती है। जिससे मल विसर्जन आसानी से हो जाता है तथा कान के पास ही एक नस से ही मल-मूत्र विसर्जन के समय कुछ द्रव्य विसर्जित होता है। जनेऊ उसके वेग को रोक देती है, जिससे कब्ज, एसीडीटी, पेट रोग, मूत्रेन्द्रिय रोग, रक्तचाप, हृदय रोगों सहित अन्य संक्रामक रोग नहीं होते। जनेऊ पहनने वाला नियमों में बंधा होता है। वह मल विसर्जन के पश्चात अपनी जनेऊ उतार नहीं सकता। जब तक वह हाथ पैर धोकर कुल्ला न करले। अत: वह अच्छी तरह से अपनी सफाई करके ही जनेऊ कान से उतारता है। यह सफाई उसे दाँत, मुंह, पेट, कृमि, जीवाणुओं के रोगों से बचाती है। जनेऊ का सबसे जयादा लाभ पेट रोगियों को होता है।

★★★

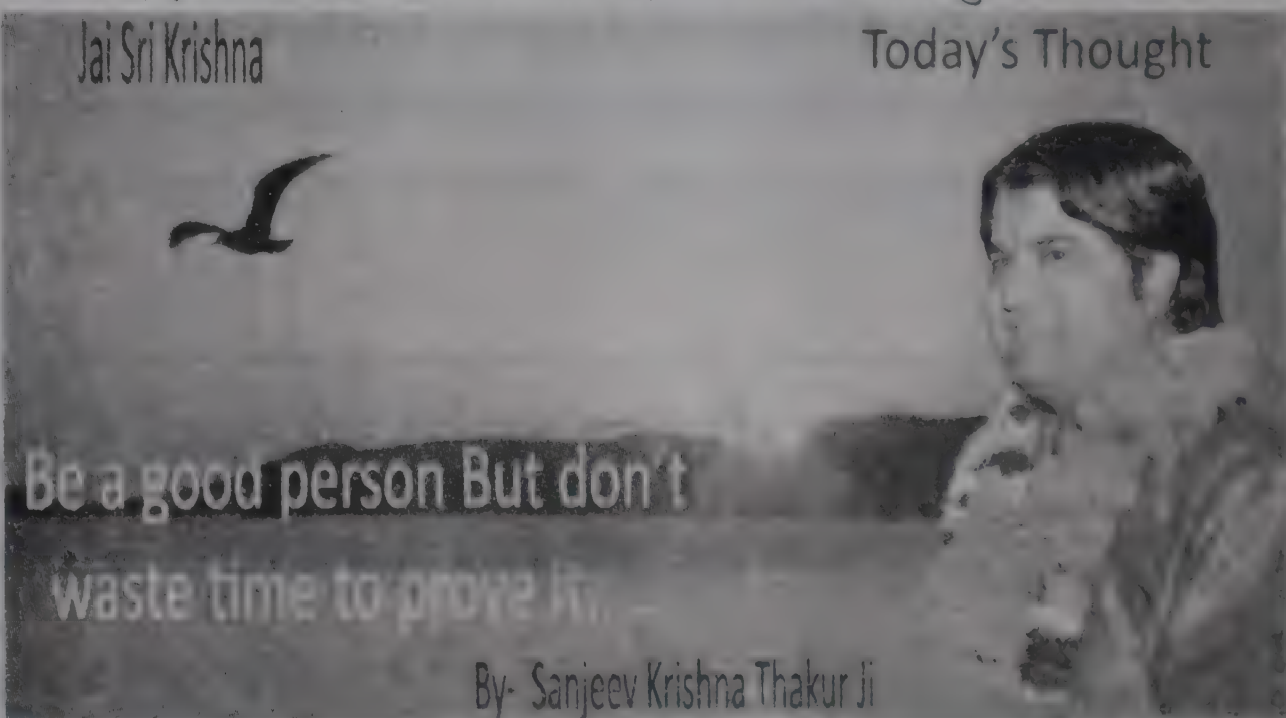
गीता में भगवान श्रीकृष्ण अर्जुन को कहते हैं कि केवल मूर्ति में मेरा दर्शन करने वाला नहीं, अपितु सारे संसार में प्रत्येक जीव के भीतर और कण-कण में मेरा दर्शन करने वाला ही मेरा भक्त है।

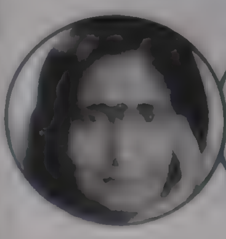


– गीता मनीषी श्री ज्ञानानंद जी महाराज

शांति का सुख

भगवान विष्णु के धाम बैकुंठ में भीड़ लगी हुई थी। अपने आसन पर विराजमान प्रभु सभी प्राणियों को तीनों लोकों की सम्पदा बांट रहे थे। उन्होंने संकल्प किया था कि आज अपने धाम से किसी को भी खाली हाथ न जाने देंगे। उनके पास धन-धान्य, संतान, वैभव-विलास, यश आदि मांगने वालों का तांता लगा हुआ था। भगवान विष्णु उदारता पूर्वक सबकी इच्छा पूरी करते जा रहे थे। बैकुण्ठ का कोष रिक्त होते देख महालक्ष्मी से रहा नहीं गया और वे दौड़ कर विष्णु का हाथ थाम कर बोलीं-हे प्रभु! यह आप क्या कर रहे हैं? यदि आप मुक्त भाव से यो ही धाम की सम्पदा लुटाते रहे तो हमारे बैकुठ में तो कुछ नहीं बचेगा। तब हम क्या करेंगे? कहां जाएंगे? ऐसे में तो हमारा सुख-चैन सब छिन जाएगा। प्रभु कुछ ऐसा करें कि जिससे हमारा सुखबना रहे।' लक्ष्मी की बात पर विष्णु मंद-मंद मुस्कराने लगे और बोले, 'देवी, इसके लिए तुम्हें चिंता करने की कोई आवश्यकता नहीं है। धन-संपदा लुटाने से हमारा सुख पहले की तरह ही बना रहेगा।' विष्णु की बात पर लक्ष्मी हैरानी से बोली, 'प्रभु, पर कैसे? सब कुछ तो आपने लुटा दिया।' विष्णु बोले, 'हां, सब कुछ लुटाने पर भी एक अमूल्य निधि ऐसी है, जो मेरे पास सुरक्षित है और उसे यहां उपस्थित नर, किन्नर, गंधर्व, विद्याधर एवं असुर से किसी ने भी नहीं मांगा है। वह निधि ऐसी है कि उसके पास रहने पर धन-संपदा स्वयं वहां खड़ी हो जाती हैं। और यदि वह नहीं है तो धन-संपदा, वैभव का कोई मोल नहीं है।' लक्ष्मी यह सुन कर बोली, 'प्रभु, आप पहेलियां क्यों बुझा रहे हैं? स्पष्ट बताइए न कि वह कौन सी निधि हे, जो आपके पास सुरक्षित है।' इस पर विष्णु बोले, 'वह निधि शांति है, जिसे कोई नहीं मांगता और व्यक्ति यह नहीं जानता कि शांति के बिना धन- सम्पदा, वैभव-विलास का कोई अर्थ नहीं है।' विष्णु की बात सुन कर लक्ष्मी संतुष्ट हो गईं और बोलीं, हां प्रभु, आप सही कह रहे हैं। अब मैं निश्चित हूँ।'





शक्ति का गलत दिशा में प्रयोग ही पाप है।

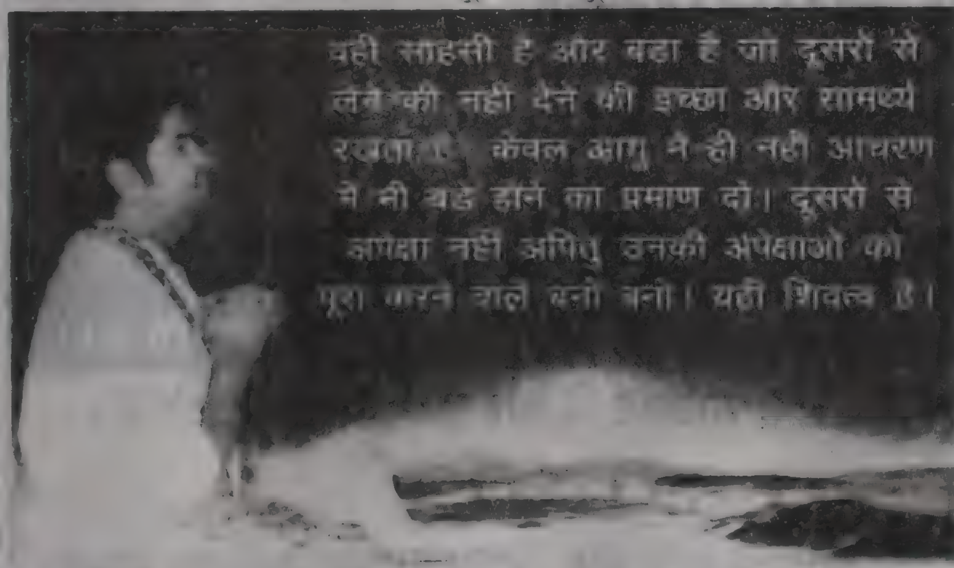
-दीदी माँ साध्वी ऋतंभरा जी

तुलसी एक : गुण अनेक

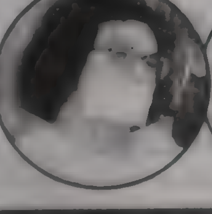
विदेशी चिकित्सक इन दिनों भारतीय जड़ी बूटियों पर व्यापक अनुसंधान कर रहे हैं। अमरीका के मैससाच्युसेट्स संस्थान सहित विश्व के अनेक शोध संस्थानों में जड़ी-बूटियों पर शोध कार्य चल रहे हैं। 'वर्ल्ड-एड्स' के अनुसार अमरीका के नेशनल कैंसर रिसर्च इंस्टीट्यूट में कैंसर एवं एड्स के उपचार में कारगर भारतीय जड़ी-बूटियों को व्यापक पैमाने पर परखा जा रहा है। विशेष रूप से तुलसी में एड्स निवारक तत्त्वों की खोज जारी है। मानस रोगों के संदर्भ मे भी इन पर परीक्षण जारी हैं। आयुर्वेदिक जड़ी बूटियों पर पूरे विश्व का रुझान इनके दुष्प्रभाव मुक्त होने की विशेषता के कारण बढ़ता जा रहा है।

कैंसर पर कारगर तुलसी— एक अध्ययन से यह बात स्पष्ट हो गई है कि अब तुलसी के पत्तों से तैयार किए गए पेस्ट का इस्तेमाल कैंसर से पीड़ित रोगियों के इलाज में किया जाएगा। दरअसल वैज्ञानिकों को 'रेडिएशन-थैरेपी' में तुलसी के पेस्ट के जरिए विकिरण के प्रभाव को कम करने में सफलता हासिल हुई है। यह निष्कर्ष पिछले दस वर्षों के दौरान भारत में ही मणिपाल स्थित कस्तूरबा मेडिकल कॉलेज में चूहों पर किए गए परीक्षणों के आधार पर निकाला गया। ये परीक्षण दस वर्षों की अवधि में हजारों चूहों पर किए गए। उल्लेखनीय है कि कैंसर के इलाज में रेडिएशन के प्रभाव को कम करने के लिए प्रयुक्त किया जाने वाला 'एम्पी फास्टिन' महँगा तो है ही, साथ ही इसके इस्तेमाल से लो ब्लड प्रेशर और उल्टियाँ होने की शिकायतें भी देखी गई हैं। जब कि तुलसी के पेस्ट के प्रयोग से ऐसे दुष्प्रभाव सामने नहीं आते।

पुदीना, तुलसी और कैंसर- कैंसर जैसी लाइलाज बीमारी से लड़ने के लिए महँगी अंग्रेजी दवाइयाँ जो कम नहीं कर पाईं, वह काम घर-घर में उपलब्ध पुदीना और तुलसी कर सकते हैं। चूहों पर किए गए परीक्षणों के बाद यह साबित हुआ है कि पुदीना और तुलसी के मिश्रण के लगातार सेवन से कैंसर पैदा होने की संभावना समाप्त होती है। राजस्थान विश्वविद्यालय में लगभग बीस सप्ताह तक चूहों के दो अलग-अलग समूहों पर यह प्रयोग किया गया। दोनों समूह के चूहों की त्वचा पर रसायन का लेप किया गया। एक समूह को तुलसी और पुदीना का मिश्रण भी पिलाया गया। चौकाने वाला तथ्य यह रहा कि जिन चूहों की त्वचा पर सिर्फ रसायन का लेप किया गया था, उनके शरीर पर चार-पाँच सप्ताह में ही बड़े-बड़े फोड़े निकल आए। इसके अलावा जिन चूहों को तुलसी और पुदीना का मिश्रण पिलाया गया, उनमें फोड़े होने में ग्यारह से बारह मास लगे।

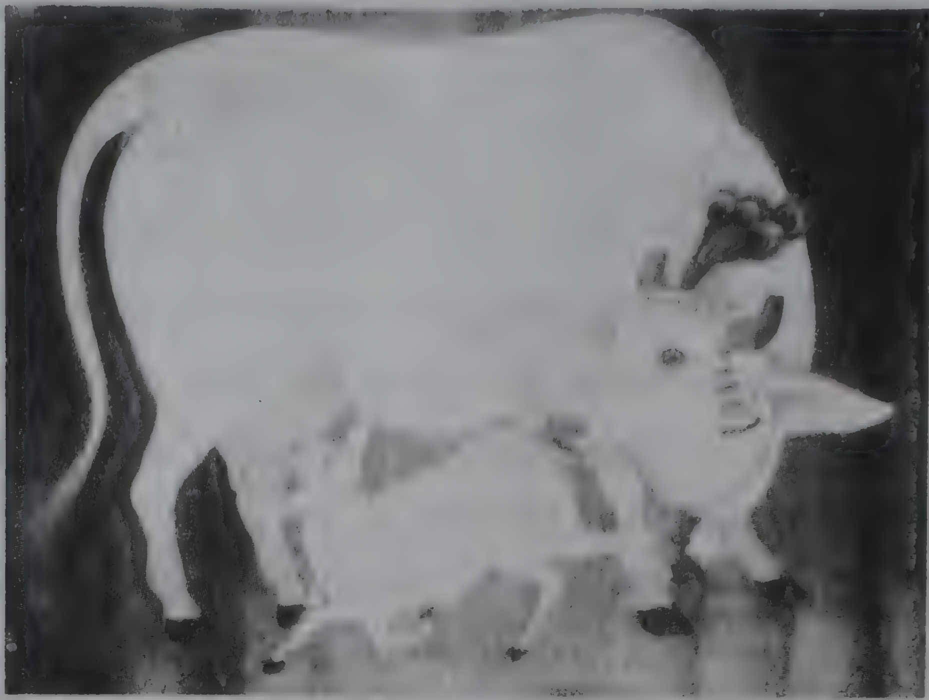


***



सिद्धांतों पर चलकर हारना, झूठ के दम पर जीतने से अच्छा है।

डा0 लोकेश मुनि जी महाराज



समर्पण गौशाला के सभी
ट्रस्टी, दानदाताओं एवं गौभक्तों को
वर्ष-2015 शुभ एवं मंगलमय हो।
गौ माता एवं श्री बाँकेबिहारी जी की कृपा से
यह वर्ष आनंद और उल्लास भरा हो।
आपकी गौ भक्ति इसी प्रकार बनी रहे।

समर्पण गौशाला

नींम गांव, कुंजेरा रोड, गोवर्धन (मथुरा)

समर्पण गौशाला परिवार आप सभी दानदाताओं के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करते हुए आपके आरोग्यमय, मंगलमय और उज्जवल भविष्य की सर्वदेवमयी गौमाता से प्रार्थना करता है।

आप अपनी सहयोग राशि समर्पण गौशाला के एकाउण्ट में भी जमा करा सकते हैं।

समर्पण गौशाला

एच.डी.एफ.सी. बैंक, गोवर्धन शाखा (मथुरा)
खाता संख्या - **21231450000099**
आई.एफ.एस.सी. कोड - **HDFC0002123**

भारतीय स्टेट बैंक, प्रताप बाजार, वृन्दावन शाखा
खाता संख्या - **30714411973**
आई.एफ.एस.सी. कोड - **SBIN0002502**

कृपया सभी दानदाता अपनी सहयोग राशि के साथ यह सहमति पत्र अवश्य भरकर भेजने का कष्ट करें।

❁ सहमति-पत्र ❁

सेवा में,

अध्यक्ष, श्री राधा माधव सेवाश्रय चैरिटेबल ट्रस्ट
श्रीराधा माधव धाम, निकट श्याम कुटी
परिक्रमा मार्ग, वृन्दाबन (मथुरा) उ.प्र.– 281121

महोदय,

मैं..पुत्र / पुत्री / पत्नी श्री..
निवासी..आपकी समिति को
रू...शब्दों में रू...
की धन राशि चैक नं0 / ड्राफ्ट / नगद..................................बैंक..
द्वारा..हेतु प्रदान कर रहा हूँ / रही हूँ।

कृपया समिति के द्वारा किये जा रहे इन पुनीत कार्यों में सहभागिता प्रदान करने का सुअवसर प्रदान करके अनुग्रहित करें।

कृपया धनराशि प्राप्ति रसीद प्रदान करने की कृपा करें।

धन्यवाद !

दिनांक.........................

भवदीय

हस्ताक्षर

नाम..
पता – ग्राम / शहर..
डाकखाना.......................थाना.......................
जिला..............................राज्य.....................
पिन कोड.......................मो. ....
पैन (PAN) नं. ....

स्वीकृत
श्री राधा माधव सेवाश्रय चैरिटेबल ट्रस्ट
अध्यक्ष / सचिव

हस्ताक्षर...........................

बृज की वृद्ध बीमार एवं बेसहारा गायों की सेवा में समर्पित



समर्पण गौशाला

नीमगाँव – कुन्जेरा रोड, गोवर्धन मथुरा (उ0प्र0)



संस्थापक : श्री संजीव कृष्ण ठाकुर जी

सदस्यता फार्म

आज भारतवर्ष में गौ वंश की अपेक्षा हो रही है। जिसके कारण जगत जननी गौ माता कूड़ा कचरा खाती हुई दर दर भटक रही है। भारतीय संस्कृति का आधार तो गौ वंश ही है। स्वयं भगवान श्री कृष्ण ने भी गौ माता की सेवा की है। गौ माता की सेवा से ही गोपाल प्रसन्न होते हैं। गौमाता की सेवा कष्टों को हरने वाली हैं।

बृजभूमि गोवर्धन में स्थित समर्पण गौशाला में वृद्ध गौ वंश की बड़े भाव से सेवा की जा रही हैं। जहां दूध ना देने वाली गौ माता आश्रय पा रही हैं।

मैं भी एक गौ माता को एक वर्ष के लिए गोद लेकर सेवा राशि प्रदान करते हुए भविष्य में भी गौ सेवा होती रहे, ऐसी प्रभु से प्रार्थना करता हूँ ।

मैं ....सुपुत्र श्री..

पता..

पिन नं. ....व्यवसाय..

फोन नं0..मोबाइल..

ईमेल..

1 वर्ष की सहयोग राशि..11000 रूपये

6 महीने की सहयोग राशि..5100 रूपये

मुख्य कार्यालय : श्री राधामाधव सेवाश्रय चैरीटेबल ट्रस्ट (रजि.)

श्री राधामाधव धाम, निकट श्याम कुटी, परिक्रमा मार्ग, (मथुरा) 281121 (उ.प्र.)

(M) : 9219664065, 8126721167

Website : www.samarpangoshala.com E-mail : info@samarpangoshala.com

नोट : कृपया अपनी सहमति व्यक्त करते हुये हस्ताक्षर कर इसे कार्यालय को भेजें।



वृन्दावन के वृक्ष को मरम न जाने कोय।
जहाँ डाल-डाल और पात पे श्री राधे-राधे होय॥

प्रिय वैष्णवगण,

भागवत प्रवक्ता एवं परम गौभक्त **श्रद्धेय श्री संजीव कृष्ण ठाकुर जी** के सानिध्य में श्रीधाम वृन्दावन में बनने वाली गोकुल धाम धर्मशाला के **''भूमि पूजन एवम् शिलान्यास समारोह''** में आप सभी सादर सहपरिवार आमंत्रित हैं।

मुख्य अतिथि

श्री हरी चन्द अग्रवाल जी

(I.I.L. Delhi)

मुख्य संरक्षक : गोकुलधाम सेवा संस्थान

कार्यक्रम

रविवार, दिनांक 25 जनवरी, 2015

हवन..प्रातः 10:00 बजे

भूमि पूजन..प्रातः 11:00 बजे

शिलान्यास..दोपहर 12:00 बजे

भण्डारा..दोपहर 1:00 बजे

स्थान : प्लॉट नं. 25, 26, 27 रूकमणि विहार
छटीकरा-वृन्दावन रोड, मथुरा

विनम्र निवेदन : पूर्व में भी आपने हमारे गौशाला प्रकल्प तथा अन्य परोपकार भरे संकल्पों को अपनी उदार भावना से पूर्ण किया है।

राधा कृष्ण की प्रेम स्थली श्री धाम वृन्दावन में बनने जा रही धर्मशाला में भी आपका सहयोग हमें प्राप्त होगा, ऐसा हमारा सतत् विश्वास है।

Title Code : UPHIN45251 Date : 14.7.2



सप्रेम आमंत्रण

श्रद्धेय श्री संजीव कृष्ण ठाकुर जी के सान्निध्य में बृजभूमि वृन्दावन में

गोकुल धाम
धर्मशाला का भव्य भूमि पूजन समारोह

25 जनवरी 2015, रविवार प्रातः 11 बजे






स्थान : प्लॉट नं. 25, 26, 27 रुकमणि विहार, छटीकरा-वृन्दावन रोड, मथुर

कृपया अपने आगमन की पूर्व सूचना दें, ताकि आपके आवास की समुचित व्यवस्था की जा स

Mob. : 0091-9219664065, 0091-9389793848, 0091-8126721167

सेवा में,

(6907) SH. RAM BALLABH VIJAY VARGIYA JI
GANDHI NAGAR, NAKA MADAR
AJMER-305007 (RAJ)
(M) 9214093793 (H-59)

स्वामी एवं प्रकाशक-श्रीराधामाधव सेवाश्रय चैरिटेबिल ट्रस्ट (रजि.), श्रीराधामाधव धाम, श्यामकुटी, परिक्रमा मार्ग, वृन्दावन (मथुरा) उ.प्र
संपादक-सत्यभान शर्मा द्वारा आशीष प्रिन्टर्स एण्ड स्टेशनर्स, 173/350, कृष्णा गली, चामुण्डा कॉलोनी, जनपद-मथुरा (उ.प्र.) से मुद्रि
Mob. : 0091-9219664065, 0091-9389793848, 0091-8126721167 E-mail : info@samarpangoshala.com